

**मूल-पोती स्त्री.** (तत्.) छोटी पोई नाम का शाक।

**मूल-प्रकृति स्त्री.** (तत्.) 1. संसार की बीज शक्ति या मूल सत्ता जिससे सृष्टि का निर्माण हुआ है, आद्या शक्ति, प्रकृति 2. त्रिगुणात्मक प्रकृति, सत्त्व, रज और तम, तीनों गुणों की साम्यावस्था।

**मूलबंध पुं.** (तत्.) 1. हठ योग की एक क्रिया जिस में सिद्धासन या वज्रासन के द्वारा शिश्न और गुदा के मध्य वाले भाग को दबाकर अपान वायु को ऊपर चढ़ाया जाता है और कुंडलिनी जागृत होकर मेरुदण्ड के सहारे ऊपर चढ़ने लगती है 2. तांत्रिक पूजन में एक प्रकार का अंगुलि-न्यास।

**मूलवर्हण पुं.** (तत्.) 1. मूलोच्छेदन, समूल नष्ट करना 2. ज्यो. सत्ताईस नक्षत्रों में से उन्नीसवां नक्षत्र।

**मूलभूत पुं.** (तत्.) 1. वह भूत या पदार्थ जिससे अन्य भूतों की सृष्टि मानी जाती है 2. किसी वस्तु के मूल से संबंध रखने वाला, आधारभूत 3. जो किसी से नकल न किया गया हो, मौलिक, असल original, fundamental

**मूलभृत्य पुं.** (तत्.) पुश्तैनी नौकर, पुराना सेवक जो काफी समय से वहां काम कर रहा हो।

**मूलमंत्र पुं.** (तत्.) ऐसा उपाय जिससे कोई कार्य या सभी कार्य शीघ्र और आसानी से सिद्ध हो जायें।

**मूलरक्षण पुं.** (तत्.) (कौटिल्य अर्थ.) मूल की रक्षा करना जैसे देश में राजधानी या प्रशासन के केंद्र की रक्षा करना।

**मूलरस पुं.** (तत्.) मूर्वा, मधुरसा नाम की लता, मरोडफली लता।

**मूलवित्त पुं.** (तत्.) मूलधन, पूँजी।

**मूल-विष वि.** (तत्.) जिसका मूल विषैला हो, विषैली जड़ वाला कनेर वृक्ष।

**मूल-व्यसन पुं.** (तत्.) खानदानी व्यसन जो किसी वंश या परिवार में कई पीढ़ियों से चला आ रहा हो।

**मूल-शाकट पुं.** (तत्.) वह खेत जिसमें मूली, गाजर जैसे मोटे जड़ वाले शाक आदि उगाये जाते हैं, मूल-शाकी।

**मूल-स्थली स्त्री.** (तत्.) पेड़ का थाला या थांवला, आलवाल, पेड़ की जड़ के पास बनाया गया गोलाकार घेरा जो सिंचाई हेतु पानी रोकने के लिए बनाया जाता है।

**मूल-स्थान पुं.** (तत्.) 1. पूर्वजों के रहने का स्थान 2. अपना मूल या आदि स्थान 3. प्रधान स्थान, राजधानी 4. दीवार, भीत 5. ईश्वर 6. आधुनिक मुलतान नगर का पुराना और मूल नाम।

**मूलहर वि.** (तत्.) जिसने अपना संपूर्ण धन नष्ट कर दिया हो, दीवालिया।

**मूला स्त्री.** (तत्.) 1. ज्योतिष में मूल नामक नक्षत्र 2. सतावर (औषधि) 3. पृथ्वी।

**मूलांश पुं.** (तत्.) 1. किसी वस्तु का मूल तत्व या अंश 2. आधारभूत संरचना जिसके ऊपर अन्य बड़ी रचना बनी हो।

**मूलाधार पुं.** (तत्.) हठ योग के अनुसार मानव शरीर के षड्चक्रों में से एक चक्र जो गुदा और शिश्न के बीच में स्थित है।

**मूलार्थ पुं.** (तत्.) 1. शब्द का मुख्य या प्रत्यक्ष अर्थ जिसपर अन्य अर्थ (प्रतीकार्थ) आधारित हों, वाच्यार्थ, निहितार्थ 2. होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में किसी औषधि का मूल रस या सार mother tincture

**मूलिक वि.** (तत्.) 1. मूल संबंधी, मूल का, जो मूल में हो, मौलिक, प्रधान 2. कंद मूल खाकर जीवन निर्वाह करने वाला, तपस्वी।

**मूलिन वि.** (तत्.) मूलोत्पन्न, मूल से उत्पन्न, वृक्ष, पेड़।

**मूलिनी स्त्री.** (तत्.) जड़ी-बूटी, मूलिका, जड़ के रूप में होने वाली औषधि।

**मूलिनी वर्ग पुं.** (तत्.) नागदंती, श्वेतवचा, श्यामा, त्रिवृत, वृद्धदारका, सप्तला, श्वेतापराजिता, मूषकपर्णी, गोंडुबा, ज्योतिष्मती, बिंबी, क्षणपुष्पी,